भाषा और संस्कृति में अन्योन्याश्रित संबंधः प्रो. गिरीश्वर मिश्र

25 अप्रैल 2014 स्थानः कोलकाता केंद्र का सभागार

देश के जाने-माने मनोविज्ञानी तथा महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. गिरीश्वर मिश्र ने कहा है कि भाषा संप्रेषण का काम तो करती ही है, हमारे अनुभवों को रचने का काम भी करती है। भाषा अमूर्त को भी गढ़ देती है। प्रो. मिश्र आज सुबह विश्वविद्यालय के कोलकाता केंद्र में

कोलकाता केंद्र में कुलपति का सूत की माला पहनाकर सम्मान करते मनोज कुमार राय

भाषा और संस्कृति के अंतर्संबंध पर व्याख्यान दे रहे थे।

उन्होंने सोदाहरण बताया कि भाषा और संस्कृति में अन्योन्याश्रित संबंध है। व्याख्यान के बाद प्रो. मिश्र ने भविष्य के पाठ्यक्रमों पर विचार -विमर्श के लिए कोलकाता केंद्र में नेपाल के महावाणिज्य दूत चंद्र

कुमार घिमिरे, यादवपुर विश्वविद्यालय की प्राध्यापिका डा. सुतापा सेनगुप्त, कलकत्ता विश्वविद्यालय के हिंदी विभागाध्यक्ष डा. राम आह्लाद चौधरी, संस्कृत विभाग के सहायक आचार्य डा. कमल किशोर मिश्र और हिंदुस्तान टाइम्स के संपादक राजीव बागची के साथ बैठक की।

कलकत्ता विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. सुरंजन दास को महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय द्वारा प्रकाशित किताबों का सेट भेंट करते हुए कुलपति प्रो. गिरीश्वर मिश्र।

प्रो. मिश्र ने कहा कि हिंदी में नेपाली तथा पूर्वोत्तर की 53 जनजातीय भाषाओं के साहित्य की कमी को दूर करने के लिए उनका विश्वविद्यालय अनुवाद कर उन भाषाओं के साहित्य को हिंदी में प्रकाशित करेगा। उन्होंने बताया कि उनके विश्वविद्यालय के कोलकाता केंद्र में हिंदी (तुलनात्मक साहित्य) में एमए, एमफिल तथा अनुवाद में स्नातकोत्तर डिप्लोमा पाठ्यक्रम इसी सत्र से शुरू होंगे।वेब पत्रकारिता का पाठ्यक्रम पहले से ही चल रहा है। प्रो. गिरीश्वर मिश्र ने शाम को कलकत्ता विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. सुरंजन दास के साथ बैठक कर संयुक्त पाठ्यक्रम प्रारंभ करने की संभावनाएं भी टटोलीं।

शिक्षा वह जो ज्ञान, कौशल और दृष्टिकोण विकसित करेःप्रो.गिरीश्वर मिश्र

9 अगस्त 2014 स्थानः कोलकाता केंद्र का सभागार

देश के जाने-माने मनोविज्ञानी तथा महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. गिरीश्वर मिश्र ने कहा है कि शिक्षा वह है जो विद्यार्थी में ज्ञान, कौशल और दृष्टिकोण विकसित करे। प्रो. मिश्र आज विश्वविद्यालय के कोलकाता केंद्र में चार नियमित पाठ्यक्रमों-एम.ए. व एमफिल हिंदी (तुलनात्मक साहित्य), वेब पत्रकारिता तथा अनुवाद में स्नातकोत्तर डिप्लोमा में प्रवेश लेनेवाले विद्यार्थियों की उद्घाटन कक्षा ले रहे थे।

सत्रारंभ कार्यक्रम को संबोधित करते हुए कुलपति प्रो गिरीश्वर मिश्र। उनके दाएं डा. ओम प्रकाश भारती तथा डा. कृपाशंकर चौबे

उन्होंने कहा कि ज्ञान और कौशल बढ़ने से विद्यार्थियों का आत्म विश्वास बढ़ता है। विद्यार्थियों को नित आत्ममंथन करना चाहिए कि उन्होंने नया क्या पढ़ा है और उससे उनके ज्ञान में कितनी वृद्धि हुई है।

यदि वृद्धिनहीं हुई है तो जाहिर है कि उनके ज्ञान में ठहराव आ गया है। प्रो. मिश्र ने सलाह दी कि विद्यार्थियों को तीन महीने में कोई किताब जरूर पढ़नी चाहिए और उस पर चर्चा करनी चाहिए। विद्यार्थियों को मूकदर्शक नहीं रहना चाहिए बल्कि साहित्य का स्वाद लेना चाहिए।

कुलपति ने सत्रारंभ वक्तव्य में विद्यार्थियों के अलावा शिक्षकों की सफलता के भी सूत्र दिए। प्रो. मिश्र ने कहा कि शिक्षक को पढ़ाए जानेवाले पाठ को हर बार पढ़कर कक्षा में जाना चाहिए। उन्होंने कहा, "मैं चार दशकों से विश्वविद्यालय में पढ़ा रहा हूं और आज भी मैं खुद पाठ पढ़कर ही कक्षा में जाता हूं। शिक्षक को पाठ के बारे में अपने को अद्यतन रखना चाहिए।"आरंभ में विश्वविद्यालय के एसोसिएट प्रोफेसर तथा कोलकाता केंद्र के प्रभारी डा. कृपाशंकर चौबे ने स्वागत भाषण किया। संचालन एम.फिल की छात्रा सोनी कुमारी सिंह तथा धन्यवाद ज्ञापन सहायक क्षेत्रीय निदेशक डा. प्रकाश त्रिपाठी ने किया। पूर्वी क्षेत्रीय सांस्कृतिक केंद्र के निदेशक डा. ओम प्रकाश भारती ने कुलपति का अंगवस्त्रम ओढ़ाकर सम्मान किया। कार्यक्रम में विद्यार्थियों ने एक दूसरे का परिचय कुलपति के समक्ष प्रस्तुत किया।कार्यक्रम की व्यवस्था कोलकाता केंद्र में तुलनात्मक साहित्य विभाग की नई एसिस्टेंट प्रोफेसर विजेता साव ने संभाली।

मीडियाकर्मी के रूप में लड़कियों को कठिन संघर्ष करना पड़ता हैः नताशा बधवार

22 अगस्त 2014 स्थानः कोलकाता केंद्र का सभागार

जानी-मानी टीवी पत्रकार नताशा बधवार ने कहा है कि महिलाओं को मीडिया के क्षेत्र में स्वयं को स्थापित करने के लिए इस पितृसत्तात्मक समाज में कठिन संघर्ष करना पड़ता है। सुश्री बधवार महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय के कोलकाता केंद्र में विद्यार्थियों से अपने अनुभव साझा कर रही थीं। नताशा ने बताया कि 1995 में जब निजी टीवी चैनल शुरू हुए तो जनसंचार में एमए करने के बाद वे कैमरापर्सन के रूप में एनडीटीवी से जुड़ीं।

उन्होंने बताया कि आज से पंद्रह साल पहले एनडीटीवी में एक पुरुष सहकर्मी उन्हें जब तंग कर रहा था तो इसकी शिकायत उन्होंने राधिका राय से की। एनडीटीवी प्रणव राय और राधिका राय ही चलाते रहे हैं। उस शिकायत के बाद उस पुरुष कर्मी को वहां से हटना पड़ा था। उसके बाद तो स्त्रियों के लिए एनडीटीवी सर्वाधिक निरापद जगह रही और आज भी है। इसके पीछे निश्चित रूप से राधिका राय की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। नताशा ने अर्णव गोस्वामी, बरखा दत्त के साथ काम करने के अपने अनुभव भी सुनाए। उन्होंने बताया कि किस तरह एनडीटीवी में तेरह साल तक देश-विदेश की कई बड़ी ऐतिहासिक घटनाएं कैमरे की नज़र से उन्होंने देखीं और दिखाईं। इसी संवाद कार्यक्रम में टीवी पत्रकार अनु सिंह चौधरी ने बताया कि जब मीडिया में आने के पहले उनका दिल्ली के इंडियन इंस्टीट्यूट आफ मास कम्युनिकेशंस में दाखिला हुआ तो उनके पिताजी की इच्छा नहीं थी कि मुझे अकेले वहां पढ़ने के लिए भेजें। उसके लिए भी संघर्ष करना पड़ा।

नताशा बधवार और अनु सिंह चौधरी मीडिया में अपने अनुभव सुनाती हुईं।

पढ़ाई पूरी करने के बाद वे मीडिया से जुड़ीं तो महसूस किया कि लड़कियों के लिए डेस्क सर्वाधिक सुरक्षित जगह होती है। बाहर कहीं भागदौड़ नहीं करनी है। एंकरिंग के लिए संपादक के चैंबर में हाजिरी नहीं लगानी है। अनु सिंह चौधरी ने एनडीटीवी में छह साल तक डेस्क पर ही काम किया।

कार्यक्रम में उपस्थित महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय के 2014-15 सत्र के विद्यार्थी।

टीवी पत्रकार सादिया अजीम ने बताया कि महिला पत्रकारों को एक नहीं, अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ता है। तीनों महिला पत्रकारों ने प्रीति साव, अनिल कुम्हार, अजय साव, सोनी कुमारी सिंह और फातिमा कनीज द्वारा पूछे गए प्रश्नों के उत्तर भी दिए। संवाद कार्यक्रम के आरंभ में विश्वविद्यालय के अनुभाग अधिकारी तथा कवि-उपन्यासकार शंभु दत्त सती ने तीनों महिला पत्रकारों को रवींद्र साहित्य भेंट कर उनका अभिवादन किया। स्वागत भाषण तथा धन्यवाद ज्ञापन कोलकाता केंद्र के प्रभारी डा. कृपाशंकर चौबे ने किया।

मुक्ति की चेतना ही आधुनिकता के विकास की पहली बिंदुः केदारनाथ सिंह

26 अगस्त 2014 स्थानः कोलकाता केंद्र का सभागार

हिंदी के विशिष्ट कवि केदारनाथ सिंह ने कहा है कि मुक्ति की चेतना ही आधुनिकता के विकास की पहली बिंदु है। डा. सिंह 26 अगस्त 2014 को महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय के कोलकाता केंद्र में 'साहित्य में आधुनिक चेतना के आरंभिक दौर' पर व्याख्यान दे रहे थे।

विद्यार्थियों को आटोग्राफ देते केदारनाथ सिंह

उन्होंने गालिब और रवींद्रनाथ की कविता का उद्धरण देते हुए कहा कि मुक्ति की चेतना उस दौर के अन्य कई रचनाकारों में भी दिखाई देती है। उन्होंने हिंदी और उर्दू को एक साथ रखकर देखने पर जोर दिया और हिंदी और उर्दू की भाषा और साहित्य के बीच जो साझे सूत्र हैं, उसका विस्तार से विवेचन किया। प्रो. सिंह ने कहा कि उस दौर के साहित्य के दौर को समझने के लिए दोनों का परस्पर अध्ययन किया जाना चाहिए। हिंदी साहित्य के उस दौर को समझने के लिए मीर और गालिब को पढ़ना चाहिए।

उन्होंने कहा कि हिंदी और उर्दू के बंटवारे के कारण, दो भाषाओं का ही बंटवारा नहीं हुआ, बल्कि दो देश बन गए। उन्होंने कहा कि दोनों भाषाओं का व्याकरण एक है। प्रो. सिंह ने कहा कि हिंदी में भारतेंदु आधुनिकता के अग्रदूत थे और उर्दू में रसा उपनाम से लिखते थे। उन्होंने कई गजलें लिखी हैं। प्रो. सिंह ने कहा कि कविता की कसौटी गद्य है। जो गद्य अच्छा नहीं जानता, वह कविता अच्छी नहीं कर सकता। उन्होंने महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय के कोलकाता केंद्र में अध्ययनरत एमए (हिंदी), एमफिल तथा वेब पत्रकारिता-अनुवाद में स्नातकोत्तर डिप्लोमा के विद्यार्थियों में लड़कियों की संख्या अधिक होने पर प्रसन्नता व्यक्त करते हुए कहा कि यहां छात्राओं की अधिक संख्या देखकर मैं बहुत खुश हूं क्योंकि एक वह समय था जब महादेवी वर्मा को लड़की होने के कारण बीएचयू में दाखिला नहीं दिया गया था। प्रो. सिंह ने विद्यार्थियों के प्रश्नों के जवाब भी दिए।

कबीर की कविता हमें आदमकद मनुष्य बनाती हैः प्रो. सदानंद शाही

25 सितंबर स्थानः कोलकाता केंद्र का सभागार

कोलकाता, 25 सितंबर। हिंदी के सुपरिचित कवि, साहित्य समालोचक और बीएचयू के प्रोफेसर डा. सदानंद शाही ने कहा है कि कबीर की कविता हमें आदमकद मनुष्य बनाती है। प्रो. शाही आज महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय के कोलकाता केंद्र में कबीर पर विशेष व्याख्यान दे रहे थे। उनके व्याख्यान का शीर्षक था-अवधू बेगम देस हमारा। उन्होंने कहा कि मनुष्य को आदमकम बनाने के संदर्भ में कबीर तुलसी से भी आगे थे।

प्रो. शाही ने कहा कि कबीर कहते हैं कि जो घर फूंके आपना चले हमारे साथ यानी कबीर के साथ वही चल सकता है जो अपना घर जलाए। इस दोहे का दूसरा अर्थ यह है कि जागते रहो नहीं तो तुम्हारे घर चोर घुस आएगा। कबीर इस कविता में क्या करने को कहते हैं? हमें कहां ले जाना चाहते हैं? दरअसल कबीर हमें बेगमपुर ले जाना चाहते हैं और बेगमपुर की नागरिकता वही हासिल कर सकता है जो जाति, धर्म, ऊंच-नीच, अमीर-गरीब के बंधनों से मुक्त हो। प्रो. शाही ने कहा कि सौ-सौ किताबें पढ़कर आनेवालों के साथ कबीर की नहीं पटती क्योंकि वे कहते हैं कि पोथी पढ़ि पढ़ि जग मुआ, पंडित भया न कोय। ढाई आखर प्रेम का पढ़े सो पंडित होय। प्रो. शाही ने कहा कि यह बहस बेमानी है कि कबीर कवि हैं या सुधारक, क्रांतिकारी हैं या संत। कबीर बहुमुखी प्रतिभा संपन्न व्यक्ति थे। वे मनुष्य को जाति, धर्म के बंधनों से मुक्त करने के

लिए रचनात्मक संघर्ष कर रहे थे। वे मनुष्य को बेहतर मनुष्य बनाना चाहते थे। यही काम कविता करती है।

भारतीय भाषा दिवस कार्यक्रम में सबसे बाएं प्रो. सदानंद साही

व्याख्यान के पूर्व विश्वविद्यालय के सहायक क्षेत्रीय निदेशक प्रकाश त्रिपाठी ने रवींद्र साहित्य भेंट कर, विश्वविद्यालय के अनुभाग अधिकारी तथा कवि-उपन्यासकार शंभु दत्त सती ने सूत की माला पहनाकर प्रो. सदानंद शाही का सम्मान किया। कोलकाता के नागरिक समाज की तरफ से इंटरनेशनल असेंबली आफ ह्यूमन राइट्स के अध्यक्ष नवनीत पांडेय ने शाल ओढ़ाकर प्रो. शाही का सम्मान किया। कार्यक्रम की शुरुआत सुशील कांति के काव्य संगीत से हुई। संचालन विश्वविद्यालय के एसोसिएट प्रोफेसर तथा कोलकाता केंद्र के प्रभारी डा. कृपाशंकर चौबे ने किया। बहुभाषिकता प्रकृति का वरदानः डा. सदानंद शाही के व्याख्यान के बाद उन्हीं की अध्यक्षता में कोलकाता केंद्र ने हिंदी पखवारे के मौके पर हिंदी दिवस को भारतीय भाषा दिवस के रूप में मनाया। कार्यक्रम में पत्रकारिता विभाग के विद्यार्थी अनिल कुम्हार तथा अजय कुमार साव, एमए हिंदी की छात्रा अंशु सिंह और प्रीति साव ने स्वरचित कविताएं सुनाईं। वेब पत्रकारिता की छात्रा जयश्री गुप्ता ने हिंदी पर कविता सुनाई जबकि अनुवाद विभाग की छात्रा सुमना दे ने बांग्ला के बुजुर्ग कवि नीरेंद्रनाथ चक्रवर्ती की कविता अमल कांति का स्वयं का किया हिंदी

अनुवाद सुनाया। नवारुण भट्टाचार्य की कविताओं का पाठ वेब पत्रकारिता के चार विद्यार्थियों- रुमा कुमारी साव, संजय पंडित, ज्योति केशरी और नेहा कुमारी गुप्ता ने किया। वेब पत्रकारिता के छात्र विवेक कुमार साव तथा एमए हिंदी की छात्रा सरिता कुमारी साव ने काकबराक, अनुवाद विभाग की छात्रा शिल्पा कुमारी साव ने असमिया और वेब पत्रकारिता के छात्र रितेश राजवंशी ने खासी भाषा की कविताओं का पाठ किया। कार्यक्रम का संचालन वेब पत्रकारिता की छात्रा पिंकी कुमारी उपाध्याय ने किया।

राष्ट्रीय एकता दिवस पर संगोष्ठी व दौड़ प्रतियोगिता

कोलकाता, 31 अक्टूबर 2014। समाजसेवी व मानवाधिकार कार्यकर्ता नवनीत पांडेय ने कहा है कि सरदार वल्लभ भाई पटेल संपूर्ण भारत के सरदार थे। उन्होंने स्वाधीनता के बाद जिस तरह पांच सौ से ज्यादा रियासतों को भारत में मिलाया, वह काम सिर्फ वे ही कर सकते थे। उनके जन्म दिन को राष्ट्रीय एकता दिवस के रूप में मनाने का भारत सरकार का संकल्प श्लाघनीय है।

श्री पांडेय आज महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय के कोलकाता केंद्र द्वारा राष्ट्रीय एकता दिवस की प्रासंगिकता पर आयोजित संगोष्ठी को संबोधित कर रहे थे।

संगोष्ठी को संबोधित करते हुए कोलकाता हाईकोर्ट के अधिवक्ता विनोद कुमार सिंह ने कहा कि विविधता और विभेद के बावजूद एकता हमारी ताकत है।

संगोष्ठी में प्रकाश त्रिपाठी, सुमना दे, अनिल कुम्हार, जयश्री गुप्ता ने भी भाग लिया। इस अवसर पर महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय के कोलकाता केंद्र ने एकता दौड़ प्रतियोगिता का आयोजन भी किया गया।

दौड़ प्रतियोगिता में छात्रा वर्ग में क्रमशः अंशु सिंह प्रथम, शिल्पा कुमारी साव द्वितीय और नेहा कुमारी गुप्ता तृतीय स्थान पर रहीं।

छात्र वर्ग में सोनु कुमार साव प्रथम, विनय कुमार प्रसाद द्वितीय और अजय कुमार साव तृतीय स्थान पर रहे।

कार्यक्रम के आरंभ में कोलकाता केंद्र के प्रभारी एसोसिएट प्रोफेसर डा. कृपाशंकर चौबे ने सभी शिक्षकों, कर्मचारियों तथा विद्यार्थियों को राष्ट्रीय एकता की शपथ दिलाई।

संगोष्ठी को संबोधित करते नववीत पांडे। उनके बगल में मंच पर बैठे हैं अधिवक्ता विनोद सिंह और डा. कृपाशंकर चौबे

फिल्म महोत्सव में बारह फिल्में दिखाई गईं

कोलकाता। 20वें कोलकाता अंतरराष्ट्रीय फिल्म महोत्सव के अवसर पर महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय के कोलकाता केंद्र ने पूर्व क्षेत्रीय सांस्कृतिक केंद्र के सहयोग से सप्ताहव्यापी फिल्म महोत्सव का आयोजन किया।

फिल्म महोत्सव के आखिरी दिन फिल्म निर्देशक राजा मित्र के साथ कोलकाता केंद्र के विद्यार्थी।

साल्टलेक में हिंदी विश्वविद्यालय के ऐकतान ईजेडसीसी सभागार में 11 नवंबर से 17 नवंबर 2014 तक चले इस महोत्सव में सांस्कृतिक धरोहरों पर बनीं बारह फिल्में दिखाई गईं। जो फिल्में दिखाई गईं, उनमें मानस भौमिक निर्देशित 'लामा डांसेज आफ सिक्किम', धनंजय मंडल निर्देशित छऊ डांस आफ पुरुलिया, अशोक विश्वनाथन निर्देशित विष्णुपुर घराना और द मसान

कैनवास पेंटिंग एंड कार्क डाल, सनत मोहंती निर्देशित द फ्लावर आफ स्टोन, मुकेश्वर लाल निर्देशित फोक डांस आफ निकोबारीज, बप्पा सेन निर्देशित पर्ल्स फ्राम द डीप, चंदन भादुड़ी निर्देशित नटुआ, संगीता विश्वास निर्देशित फोक डांसेज आफ सिक्किम और राजा मित्रा निर्देशित मुरल पेंटिंग्स आफ ओडीशा तथा कालीघाट पेंटिंग्स एंड डाइंग नामक फिल्में शामिल हैं। प्रतिदिन फिल्म के प्रदर्शन के उपरांत संबद्ध फिल्म निदेशक के साथ संवाद का कार्यक्रम हुआ। 'लामा डांसेज आफ सिक्किम'के निदेशक मानस भौमिक, 'छऊ डांस आफ पुरुलिया' के निदेशक धनंजय मंडल, 'द फ्लावर आफ स्टोन' के निर्देशक सनत मोहंती, 'नटुआ' के निदेशक चंदन भादुड़ी और 'पेंटिंग्स आफ ओडीशा' तथा 'कालीघाट पेंटिंग्स एंड डाइंग' के निर्देशक राजा मित्र के साथ विद्यार्थियों ने संवाद किया। संवाद कार्यक्रम में वेब पत्रकारिता के विद्यार्थी सोनू कुमार साव, रितेश राजवंशी, ज्योति केशरी, अजय कुमार साव, एमए हिंदी की छात्रा सरिता कुमारी साव ने बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया।

इन फिल्म निर्देशकों का विश्वविद्यालय की तरफ से प्रकाश त्रिपाठी तथा शंभु दत्त सती ने सूत की माला पहनाकर तथा ईजेडसीसी की तरफ से गौतम मजुमदार ने अंगवस्त्रम ओढ़ाकर सम्मान किया। महोत्सव का संचालन हिंदी विश्वविद्यालय के एसोसिएट प्रोफेसर तथा कोलकाता केंद्र के प्रभारी डा. कृपाशंकर चौबे ने किया।

स्थापना दिवस समारोह में आए राज्यपाल

कोलकाता। राज्यपाल केशरीनाथ त्रिपाठी ने कहा कि हिंदी भारतीयों की प्राण भाषा है. श्री त्रिपाठी महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय के स्थापना दिवस समारोह को बतौर मुख्य अतिथि संबोधित कर रहे थे. उन्होंने कहा कि हिंदी हमारी पहचान है. यह हमारे अभिमान और स्वाभिमान की भाषा है. हिंदी पर चोट भारतीयता पर चोट है, लेकिन हिंदी के साथ न्याय नहीं हुआ है. वह राजनीति का शिकार हो गयी है. उन्होंने उम्मीद जतायी कि महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय हिंदी को विश्व भाषा बनाने में समर्थ होगा. उन्होंने विदेशों में हिंदी से जुड़े अपने अनुभव भी सुनाए। राज्यपाल ने अपनी चुनिंदा क विताओं अत्यंत प्रभावी ढंग से पाठ किया. जाने माने गायक ओमप्रकाश मिश्र ने राज्यपाल की छह कविताओं. मन तेरे बिन माने ना.., जिंदगी बहुत बड़ी नदी., बंद वातायण सभी खुल जायेंगे.., लोग आ गया विहान.., बंदे

मातरम हम गायेंगे.., और बूढ़ों में भी बचपन होता है.., की संगीतिज्ञ प्रस्तुति की. श्री मिश्र ने केशरी नाथ त्रिपाठी के कुछ दोहे भी गाकर सुनाये. समारोह की अध्यक्षता करते हुए ब्रिटेन से

आये वरिष्ठ कवि-कथाकार डॉ. कृष्ण कुमार ने कहा कि हिंदी विश्वविद्यालय हिंदी को ग्लोबल भाषा बनाने की दिशा में जो काम कर रहा है, वह शलाघा का विषय है. समारोह के विशिष्ट अतिथि सूर्यप्रकाश तिवारी ने कहा कि हिंदी विश्वविद्यालय का कोलकाता केंद्र डॉ. कृपाशंकर चौबे के नेतृत्व में प्रतिकूलताओं में भी आगे बढ़ रहा है.

कोलकाता केंद्र के स्थापना दिवस समारोह में गीत गाते विद्यार्थी। मंच पर राज्यपाल केशरीनाथ त्रिपाठी, ओपी भारती और उनके पीछे डा. प्रकाश त्रिपाठी, एसपी तिवापी, कृष्णकुमार तथा कृपाशंकर चौबे

इजेडसीसी के निदेशक डॉ. ओम प्रकाश भारती ने कहा कि इजेडसीसी और हिंदी विश्वविद्यालय मिल कर कई दिशाओं में महत्वपूर्ण काम कर सकते हैं. मंच पर आसीन अतिथियों का सम्मान अनुभाग अधिकारी शंभुदत्त सती, हिंदी विश्वविद्यालय की सहायक प्रोफेसर डॉ. चित्र माली, डॉ. अनुजा सुप्रिया, मानवाधिकार कार्यकर्ता नवनीत पांडेय, टीवी पत्रकार विक्रांत दूबे, प्रोफेसर अमरनाथ और अधिवक्ता विनोद सिंह ने सूत की माला पहना कर और अंग वस्त्रम ओढ़ा कर किया. कार्यक्रम का संचालन हिंदी विश्वविद्यालय के कोलकाता केंद्र के प्रभारी डॉ. कृपाशंकर चौबे ने किया. कार्यक्रम की शुरुआत हिंदी विश्वविद्यालय के कुलगीत से हुई और समापन गांधीजी के प्रिय भजन वैष्णव जन से. जिसे हिंदी विश्वविद्यालय की छात्रओं : सोनी कुमारी सिंह, प्रीति

साव, ज्योति केसरी, प्रीति राय, नेहा चौधरी, सरिता कुमारी साव, अंशु सिंह, पिंकी उपाध्याय व नीरू कुमारी सिंह ने संगीतकार देवयानी मुखर्जी के निर्देशन में प्रस्तुत किया. स्वागत भाषण कोलकाता केंद्र के सहायक प्रोफेसर डॉ. अमित राय ने किया और धन्यवाद ज्ञापन सहायक क्षेत्रीय निदेशक डा. प्रकाश त्रिपाठी ने किया।

प्रति कुलपति ने किया कोलकाता केंद्र का दौरा

कोलकाता। महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय के प्रतिकुलपति प्रो. चित्तरंजन मिश्र ने विगत 12 से 14 जनवरी 2015 तक कोलकाता केंद्र का दौरा किया। केंद्र के विद्यार्थियों ने कुलगीत गाकर प्रति कुलपति का स्वागत किया। प्रतिकुलपति ने विद्यार्थियों से संवाद कर उनके पठन-पाठन की प्रगति का जायजा लिया। प्रति कुलपति ने कोलकाता केंद्र के सहयोग से पूर्वी क्षेत्र सांस्कृतिक केंद्र द्वारा कला संरक्षण पर आयोजित अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी में भी हिस्सा लिया।

कला संरक्षण पर अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी में अध्यक्षीय वक्तव्य देते प्रो. चित्तरंजन मिश्र। उनके बाएं कैमरेन तथा दाएं रतनथियाम।

संगोष्ठी की अध्यक्षता करते हुए प्रो. चित्तरंजन मिश्र ने कहा कि सच्चा कलाकार निरर्थकता में सार्थकता को पा लेता है। कला जीवन का संपूर्ण समर्पण मांगती है। यह जीवन को साधना से जोड़ती है। कला की दुनिया रहस्य की होती है। उन्होंने कहा कि खास कुछ बेचैनियों का नाम इंसान पड़ गया। यही बेचैनी कला, संस्कृति और धरोहर को जीवित रखती है। कला को बचाने का अर्थ है मनुष्य की मनुष्यता को बचाना। कला ने पूरे भारत को सत्य के प्रयोगकर्ता के रूप में महात्मा गांधी को दिया। उन्होंने कहा कि बाजारीकरण और उपभोक्तावाद के दौर में यह प्रश्न उभरा है कि- नहीं था तो यही पैसा नहीं था/नहीं तो आदमी में क्या नहीं था?

संगोष्ठी को संबोधित करते हुए राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय के अध्यक्ष रतनथियाम ने कहा कि वर्तमान समय में भारतीय कला, संस्कृति और धरोहर की रक्षा की बात करना एक चुनौतीपूर्ण कार्य बन चुका है। वर्तमान समय में कला और संस्कृति का विकास थम सा गया है। पाश्चात्य रहन-सहन और खान-पान के तौर तरीकों ने हमारी संस्कृति को नष्ट करने का ही काम किया है। इसके साथ ही राजनीतिक घटनाचक्रों के दुष्प्रभावों से हमारी धरोहर अछूती नहीं रही है। जापानी अध्येता कैमरेन स्टीले ने भी अपने वक्तव्य में कला, संस्कृति के संरक्षण की जरूरत पर जोर दिया। संगोष्ठी का संचालन पूर्वी क्षेत्र सांस्कृतिक केंद्र के निदेशक डा. ओम प्रकाश भारती तथा धन्यवाद ज्ञापन विवि के कोलकाता केंद्र के प्रभारी डा. कृपाशंकर चौबे ने किया।

प्रतिकुलपति प्रो. चित्तरंजन मिश्र ने कलकत्ता विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग में भी समकालीन साहित्य पर डेढ़ घंटे का लंबा किंतु सारगर्भित व्याख्यान दिया। प्रो. मिश्र ने विख्यात लेखिका महाश्वेता देवी से भी मुलाकात की और उन्हें उनके 90वें जन्म दिन पर विश्वविद्यालय की तरफ से बधाई देते हुए उनके दीर्घायु होने की कामना की। प्रति कुलपति ने लेखिका को वर्धा आने का भी निमंत्रण दिया।

कोलकाता केंद्र में कामायनी का मंचन

महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय के कोलकाता केंद्र में बीते 25 जनवरी 2015 को कवि-रंगकर्मी व्योमेश शुक्ल निर्देशित कामायनी का मंचन हुआ। इस अवसर पर विशेष रूप से उपस्थित ज्ञानपीठ पुरस्कारप्राप्त कवि केदारनाथ सिंह ने कहा कि उन्होंने कामायनी का मंचन सबसे पहली बार तब देखा था जब वे बनारस में एम ए के छात्र थे और दर्शक के रूप में पृथ्वीराज कपूर जैसे लोग थे। मंचन समाप्त होने पर जब पृथ्वीराज जी से पूछा गया तो उन्होंने

गुरुदेव रवींद्रनाथ टैगोर की पंक्तियों को उद्धृत करते हुए कहा कि वे अगले साल जयशंकर प्रसा

हिंदी विवि के कोलकाता केंद्र में कामायनी के मंचन का एक दृश्य

द जी की कहानी 'गुंडा' खेलना चाहेंगे। इसके बाद उन्होंने कहा कि जो चीजें सिर्फ कक्षाओं में पढ़ाई जाती हैं, वे अधिकतर मृतप्रायः रूप में पढ़ायी जाती हैं लेकिन व्योमेश शुल्क ने इसे मंच पर सजीव रूप में प्रस्तुत किया है और किसी भी रचना को अकादमिक से बाहर निकल कर देखने और पढ़ने से ही उसके असली मर्म को जाना जा सकता है। उन्होंने अपने वक्तव्य के अन्त में यह भी कहा कि जब तक मेरी आँखें देखने लायक तथा मैं चलने लायक हूं तब तक मैं एक बार जयशंकर जी की ही कहानी गुंडा का मंचन भी इसी तरह सजीव देखना चाहता हूँ। इस काम को यदि कोई कर सकता है तो एक ऐसा कवि ही कर सकता है जो और यह काम सिर्फ व्योमेश शुक्ल ही कर सकते हैं। महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय की ओर से पूरी टीम का सूत की माला पहना कर स्वागत किया गया और निदेशक व्योमेश शुक्ल का स्वयं डा.

केदारनाथ सिंह ने सूत की माला पहना कर, अंगवस्त्रम ओढ़ाकर और विश्वविद्यालय का स्मृति चिह्न भेंट किया। रूपवाणी की संरक्षिका श्रीमती शकुन्तला शुक्ल का श्रीमती चन्द्रा पांडेय ने सूत की माला पहना कर तथा अंगवस्त्रम ओढ़ाकर सम्मान किया। इस अवसर पर रूपवाणी के सभी कलाकारों का विश्वविद्यालय की तरफ से सम्मान किया गया। डा. वसुमति डागा ने श्रद्धा की अभिनय करने वाली नंदिनी, मनु की भूमिका करने वाली स्वाति का डा. चन्द्रा पांडेय ने, इड़ा और लज्जा की भूमिका करने वाली काजोल, काम की भूमिका में तापस का नवनीत पांडेय, आकुलि किलान की भूमिका में जय का डा. वेदरमण पांडेय, आकाश का राजेंद्र राय, अश्विनी का विनोद सिंह, विशाल का श्री विश्वास ने, दीपक का श्री मंगलेश राय ने, मीनाक्षी का फातिमा कनीज ने, मानव की भूमिका निभा रही 6 साल की साखी का स्वयं डा. केदारनाथ सिंह ने सूत की माला पहना कर और उसके अभिनय से खुश होकर उसे एक हजार रुपए का नगद पुरस्कार भी दिया।

नैक पीअर टीम ने किया कोलकाता केंद्र का दौरा

विगत 19 फरवरी 2015 को नैक पीअर टीम ने विश्वविद्यालय के कोलकाता केंद्र का दौरा किया। इस टीम में मैसूर विश्वविद्यालय में जनसंचर की प्रोफेसर डा. उषा रानी नारायना और मिजोरम विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग के प्रोफेसर सुशील कुमार शर्मा शामिल थे। नैक पीअर टीम के समक्ष कोलकाता केंद्र के प्रभारी डा. कृपाशंकर चौबे ने केंद्र की अकादमिक गतिविधियों तथा भविष्य की योजनाओं की प्रस्तुति पावर प्वाइंट के जरिए की। टीम ने केंद्र के शिक्षकों, अधिकारियों, कर्मचारियों तथा विद्यार्थियों के साथ अलग-अलग बैठक की।

भाषा मित्र भी बनाती है शत्रु भीः प्रो. गिरीश्वर मिश्र

कोलकाता। महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. गिरीश्वर मिश्र ने 20 मार्च 2015 को विश्वविद्यालय के कोलकाता केंद्र में भाषा और यथार्थ पर व्याख्यान देते हुए कहा कि भाषा केवल अभिव्यक्ति का माध्यम नहीं है, बल्कि एक परफार्मेंस भी है जिसके माध्यम से मित्र भी बनाया जा सकता है और शत्रु भी। प्रो. मिश्र ने कहा कि यह हमें तय करना है कि भाषा का उपयोग किस तरह का समाज बनाने में हम करना चाहते हैं। प्रो. गिरीश्वर मिश्र ने कहा कि भाषा की ताकत है कि घोर निराशा के समय में एक व्यक्ति ने निराशा का बिम्ब खींचने के बजाय उसे दूर करने के लिए अच्छे दिन

राज्यपाल को महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय द्‌वारा प्रकाशित किताबों का सेट भेंट करते कुलपति प्रो. गिरीश्वर मिश्र

लाने का सपना दिखाया और उसी का प्रभाव है जो आज का यथार्थ भी है कि वह व्यक्ति देश की सत्ता में है। प्रो. मिश्र ने कहा कि भाषा यथार्थ का निर्माण भी करती है। कुलपति ने इस अवसर पर कोलकाता केंद्र में संचालित होनेवाले पाठ्‌यक्रमों के बारे में हिंदी-बांग्ला के बुद्धिजीवियों के साथ बैठक भी की। कुलपति ने 21 मार्च 2015 को भी कोलकाता केंद्र के शिक्षकों, अधिकारियों तथा कर्मचारियों के साथ बैठक की तथा वहां के अकादमिक कार्यों की समीक्षा की।

चार दिन की कोलकाता यात्रा पर आए प्रो. मिश्र ने पश्चिम बंगाल के राज्यपाल केशरीनाथ त्रिपाठी से भी मुलाकात की और उन्हें विश्वविद्यालय द्वारा प्रकाशित किताबों का एक सेट भेंट किया। इस अवसर पर राज्यपाल ने भी अपनी किताबें कुलपति को भेंट की। यह सौजन्य मुलाकात ढाई घंटे तक चली।